मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

बहरों को सुनाने के लिए धमाकों की ज़रूरत होती है 2
भाजपा के कुशासन में लोकतंत्र, सच्चाई और ईमानदारी की हत्या 4
हिंडेनबर्ग/अदाणी : खबरों की बारिश से दबाई जाने वाली सच्चाई 5
56 इंच भी वही और 18 घंटे काम करने वाला भी वही! 6
चिकित्सा सेवाओं के नाम पर खट्टर ने मोदी नौटंकी को आगे बढ़ाया 8

वर्ष 37 | अंक 18 | फरीदाबाद | 12-18 मार्च 2023 | फोन-8851091460 | 5.00 ₹

गोरक्षक गुंडों के आगे बेबस बनी हरियाणा पुलिस

राज्य समर्थित गुंडे गोरक्षा के नाम पर अवैध हथियारों का करते हैं प्रदर्शन, जान से मारने से भी नहीं चूकते

फरीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) गऊ रक्षा की आड़ में अवैध हथियारों का प्रदर्शन और मारपीट कर जान तक लेने वाले गुंडों के आगे हरियाणा पुलिस बेबस है। गुंडों को सत्ता और राजनीतिक समर्थन हासिल होने के चलते पुलिस इनके खिलाफ कार्रवाई करना तो दूर उल्टे कानून की धज्जियां उड़ाते हुए साथ देती है। कथित पशु तस्करों को उसके संवैधानिक और कानूनी अधिकार से वंचित रखा जाता है।

केंद्र और राज्य में भाजपा सरकारें आने के बाद से हरियाणा ही नहीं पूरे देश में गोरक्षा दलों की बाढ़ आ गई, साथ ही शुरू हुआ गोरक्षा के नाम पर कथित पशु तस्करों की मारपीट, जान से मारने की घटनाओं का सिलसिला। पुलिस के डीएसपी (फिरोजपुर झिरका) सतीश कुमार इन गोरक्षकों को गुंडा और पशु तस्करों से वसूली करने वाला करार देते हैं। सतीश कुमार के मुताबिक यह गोरक्षक पशुओं से भरी गाड़ी पकड़ते हैं और दस हजार से पचास हजार रुपये की रकम वसूल कर छोड़ देते हैं। यदि सौदा नहीं पटता तो पकड़े गए लोगों की बेरहमी से पिटाई कर उन्हें अधमरी हालत में पुलिस को थमा देते हैं।

सतीश कुमार कहते हैं कि गोरक्षक दलों में अधिकतर अपराधी तत्व शामिल हैं।

फरीदाबाद के धौज पुलिस स्टेशन में अतिरिक्त एसएचओ पद पर तैनात धर्मबीर सिंह ने बेचारगी जताते हुए बताया कि गोरक्षक लोगों को इतनी बुरी तरह पीट कर लाते हैं कि उन्हें हिरासत में लिए जाने के 24 घंटों के भीतर न्यायालय में प्रस्तुत करना नामुमकिन होता है। ऐसे लोगों को अवैध रूप से दो से तीन दिन हिरासत में रख कर उन्हें इस लायक किया जाता है कि वह चल फिर सकें, इसके बाद ही उन्हें न्यायालय पहुंचाया जाता है। यह गोरक्षक पुलिस की मौजूदगी में भी बेखौफ होकर अवैध हथियारों का प्रदर्शन करते हैं। गोरक्षा के नाम पर मारपीट और हत्या करने वालों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई भी सुस्त नजर आती है, इसका कारण इन गुंडों को सत्ता और राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होना है।

अधिकतर गोरक्षक दल दक्षिणपंथी हिंदू संगठनों से जुड़े हैं। शायद यही कारण है कि जुनैद और नासिर की हत्या के मुख्य आरोपी मोनू मानेसर सहित पांच अन्य आरोपियों तक पुलिस घटना के तीन सप्ताह बीतने के बावजूद नहीं पहुंच सकी है।

ज़िला सैनिक,अर्धसैनिक कार्यालय पर मज़दूर मोर्चा की रिपोर्ट से मचा हड़कंप

शराबी-कबाबी बाबू रामफल ने संपादक को फोन पर धमकी दी

'मज़दूर मोर्चा' की 5-11 मार्च को छपी खबर से फ़रीदाबाद, पलवल, चंडीगढ़ और पंचकूला में हड़कंप मच गया है और ऐसी खबरें आ रही हैं कि इस विभाग में ऊपर बैठे अधिकारी व मंत्री अपने आप को बचाने की मुद्रा में आ गए हैं व एक दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। कर्नल अमन यादव उर्फ़ अमन सिंह उर्फ़ अमन सिंह यादव से फ़रीदाबाद विभाग की सरकारी गाड़ी गुड़गांव में ही रखने व दुरुपयोग करने समेत अन्य आरोप तय करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। वहीं दूसरी तरफ़ कर्नल अमन यादव ने फ़रीदाबाद में विभाग के कर्मचारियों को आदेश दिया है कि संपादक को यह जानकारी देने वालों का पता करो। इसी सिलसिले में कार्यालय के बाबू रामफल का इस संपादक के पास धमकी भरा फ़ोन भी आया।

कर्नल अमन यादव ने विभाग में कार्यरत चमचों को यह पता लगाने के लिए आदेश जारी किए कि ये पोल किस-किस ने खोली है।

कई पूर्व सैनिकों व अर्धसैनिकों ने इसे "देर आए पर दुरुस्त आए" की संज्ञा दी और यह भी बताया कि हालांकि समाचार पत्र में छपी सभी बातें न केवल सत्य है बल्कि और भी कई इश्यू इसमें कवर नहीं हुए हैं। उन्होंने बताया की बाबू रामफल की हरकतें कोई नई नहीं है और इसने फ़रीदाबाद में अपना दबदबा बनाया हुआ है जिसके कारण यहां पर लगे ऑफ़िसर भी इसको नज़रअन्दाज़ करते रहे हैं, माने ये कि बाबू रामफल व उसके एक चमचे का (जो इस विभाग में अपने पिता जी के स्थान पर अनुकंपा पर लगा है) पूरा वर्चस्व है।

इस विभाग में कार्यरत कर्मचारियों की कई बार ट्रांसफ़र की कोशिश की गई लेकिन अपनी भ्रष्ट कमाई का हिस्सा चंडीगढ़ और पंचकूला पहुंचाने के चलते ये फ़रीदाबाद में ही कई-कई वर्षों से जमे हुए हैं।

बाबू रामफल और उसके मातहत काम करने वाले चमचे बड़े-बूढ़े मजबूर पूर्व सैनिकों, वीरांगनाओं, वीरनारियों की प्रॉपर्टी को बेचने व ख़रीदने, ब्याज पर लोगों को पैसा देने, क्रिकेट मैच, मौसम, बारिश होने या न होने पर सट्टा लगाने, सरकारी स्टेशनरी को बेचने, पंचायत लगा कर फ़ैसले करने व इस बाबत मोटी रक़म वसूलने, शाम व रात्रि में जुए व शराब की महफ़िल जमाने आदि काम में संलिप्त हैं। इसी के चलते यह भी आशंका जतायी जा रही है कि इस विभाग में कार्यरत कर्मचारियों की आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने व इनकम टैक्स पेमेंट ना करने की जांच करने पर कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आयेंगे।

रामफल : हैडबाबू उर्फ गिरोह का सरगना

क्या सरकार ध्यान देगी ?

विभाग के शीर्ष पर बैठे विजेन्द्र कुमार, आईएएस, (एडिशनल चीफ़ सेक्रेटरी) तथा कैप्टेन मनोज,आईएएस अपने विभागीय कर्मचारियों को लूट-कमाई की आजादी देने के बजाय लाखों पूर्व सैनिकों, अर्द्ध सैनिकों का वेलफेयर देखें, जिनके लिए मूलतः यह विभाग बनाया गया है।

पहली पंक्ति में खड़े इन चोर,डाकू,चरित्रहीन, फ़ौज से भी पेंशन लेने वाले और हरियाणा सरकार से भी वेतन भोगी इन सरकारी कर्मचारियों को नहीं बल्कि अंतिम छोर पर खड़े बड़े-बूढ़े, सीनियर सिटीजन पूर्व सैनिकों, वीरनारियों, वीरांगनाओं का भला करने की ओर ध्यान दें।